# DR.BRR GOVERNMENT DEGREE COLLEGE,
# डॉ. बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय,
# JADCHERLA, जड्चेर्ला
## MAHABUBNAGAR DIST, TELANGANA
## जिला: महबूब नगर, तेलंगाना राज्य

Department of Hindi / हिन्दी –विभाग

**Student Study Project on**

## "Krishna Bhakti Kavya Ki Visheshatayein "

## छात्र अध्ययन परियोजना कार्य

## " कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ"

**प्रस्तुति / Submitted by**

| S.No. | Roll.No. | Name of The Student | Class |
|---|---|---|---|
| 1 | 210330064051015 | C.Shiva Kumar | B.Com 1 year |
| 2 | 210330064051025 | G.Nandishwari | B.Com 1year |
| 3 | 210330064051042 | K.Bhagyasri | B.Com 1year |
| 4 | 210330064051057 | Mohd.Riyazuddin | B.Com 1year |
| 5 | 210330064051021 | M.Shiva Kumar Naik | B.Com 1year |
| 6 | 210330064051069 | N.Sai. | B.Com 1year |
| 7 | 210330064051075 | P.Harsha Rampal | B.Com 1year |
| 8 | 210330064052021 | C.ShivaPrasad | B.Com 1year |

**पर्यवेक्षक / Supervisor**

**डॉ. नरसिंह राव कल्याणी** एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी. /

**Dr.NarsmhaRao Kalyani M.A.,M.Phil.,Ph.D.**

सहायक आचार्य, / Asst.Professor

हिन्दी-विभाग/ Dept. of Hind

# DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE, JADCHERLA

## Certificate

This is to certify that the Present Project work entitled **"Krishna Bhakti Kavya Ki Visheshatayein "** is the Bonafide work of 1. C.Shiva Kumar. 2.G.Nandishwary 3K.Bhagyasri. 4.Md.Riyazuddin 5. M.Shiva Kumar Naik 6. N.Sai.7. P.Harsha RamPal 8.C.ShivaPrasad under the Supervision of Dr.K.Narsimha Rao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College, Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

Date : 27/12/2021.

Dr.K.Narsimha Rao
Dept of Hindi

Principal
DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE,
JADCHERLA

Principal
Dr. BBR Government Degree College
Jadcherla, Dist.Mahabubnagar

# DECLARATION

We hereby declare that the investigation results incorporated in the present Study Project entitled "**Krishna Bhakti Kavya Ki Visheshatayein** " were originally carried out by us under the Supervision of Dr.K.Narsimha Rao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College, Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

| S.No. | Roll.No. | Name of The Student | Class | Signature |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 210330064051015 | C.Shiva Kumar | B.Com 1 year | C. Shiva Kumar. |
| 2 | 210330064051025 | G.Nandishwari | B.Com 1year | G. Nandishwari |
| 3 | 210330064051042 | K.Bhagyasri | B.Com 1year | K. Bhagyasri |
| 4 | 210330064051057 | Mohd.Riyazuddin | B.Com 1year | Mohd. Riyazuddin |
| 5 | 210330064051021 | M.Shiva Kumar Naik | B.Com 1year | M. Shivakumar |
| 6 | 210330064051069 | N.Sai. | B.Com 1year | N. Sai |
| 7 | 210330064051075 | P.Harsha Rampal | B.Com 1year | P. HarshaRampal |
| 8 | 210330064052021 | C.ShivaPrasad | B.Com 1year | C. Shiva Prasad. |

Date : 27/12/2022

# Abstract

## “Krishna Bhakti Kavya Ki Visheshatayein ”

Indian religion, practice, culture, literature and arts are influenced by the unique personality of Krishna as much as they are not by any other character. The tradition of Krishna narrative is very ancient, which is available in various forms in Indian literature. In Vedic and Sanskrit literature, three forms of Krishna are found in the form of a sage and a preacher of religion, in the form of Niti Visharad, Kshatriya king, in the form of child and adolescent, various types of supernatural and supernatural leelakari incarnations.

Krishna's poetry has special importance in the Saguna Bhakti stream of Bhakti period in Hindi literature. Krishna Bhakti Kavya Dhara means that poetry stream in which poets composed their poetic texts based on the character of Krishna, an incarnation of Lord Vishnu. The poets of this tradition have inscribed heart-warming pictures of Krishna's child form and his various pastimes in their poetry. The Bhagavata Purana is the basis of this poetry. Vallabhacharya's 'Pushti Sampradaya' is considered to have contributed a lot in the promotion of Krishna Bhakti.

# Acknowledgement

We are thankful to our principal Dr. Appiya Chinnamma , who stands as an inspiration behind doing this student study-project work. We owe our gratitude for her concern and necessary feedback on the prepared study projects.

We are also thankful to our Supervisor Dr. Narasimha Rao Kalyani Assistant Professor, Hindi Department, who extended his full cooperation in doing this student-project work meaningfully. His unparalleled suggestions and informative inputs have contributed a lot in presenting this project work in a beautiful and systematic manner. We express our gratitude to him.

Finally, we extend our heartfelt thanks to our Teashers, friends and all Dr. Burgula Ramakrishna Rao Government Degree College, Jadcherla family, whose best wishes are always with us.

*********

# धन्यवाद ज्ञापन

इस छात्र अध्ययन – परियोजना कार्य को करने की प्रेरणास्रोत एवं प्रोत्साहन देने वाली आदरणीय प्राचार्या **डॉ. अप्पीय चिन्नम्मा जी** के प्रति हम श्रद्धा पूर्वक नमन करते हैं, जिनके अतुलनीय वात्सल्यपूर्ण शब्द परियोजना – कार्य करने के प्रति ऊर्जा का काम करती रही हैं। आपके आशीर्वाद एवं कृपा हम पर सदा के लिए बरसते रहें यही प्रार्थना है।

इस छात्र – परियोजना कार्य करने में सम्पूर्ण सहयोग देने वाले श्रद्देय गुरुजी **डॉ . नरसिंह राव कल्याणी जी** सहायक आचार्य , हिन्दी विभाग, को धन्यवाद प्रकट करना मात्र एक औपचारिकता है। आपके सुझाव एवं सूचनाएँ इस परियोजना कार्य को सुंदर एवं व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने में बहुत–बहुत योगदान दिये हैं। आपके प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं।

और अंत में अपने अध्यापकों , मित्रों एवं समस्त **डॉ. बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय, जड्चेर्ला** परिवार के प्रति हम हृदय गहनतल से धन्यवाद अर्पित करते हैं, जिनकी शुभकामनायें सदा हमारे साथ हैं।

*******

# अनुक्रमणिका

*** Hindi Students Study Project – Synopsis / रूपरेखा**


**1. प्रस्तावना / परिचय :**

**2. कृष्ण भक्ति काव्य का परिचय**

**3. कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ**

**3.1. कृष्ण लीलाओं का वर्णनः**

**3.2. बालमनोविज्ञान का अद्‌भूत चित्रणः**

**3.3. अद्वितीय वात्सल्य चित्रणः**

**3.4. सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन की अभिव्यक्तिः**

**3.5. भक्ति भावनाः**

**3.6. श्रृंगार वर्णनः**

**3.7. भ्रमरगीत काव्य परंपराः**

**3.8. प्रकृति चित्रणः**

**3.9. ब्रजभाषा का अप्रतिम काव्यः**

**4. निष्कर्ष**

# रूपरेखा

## Hindi Students Study Project – Synopsis

**1. Title:शीर्षक : कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ ("Krishna Bhakti Kavya Ki Visheshatayein ")**

**2. Statement of the Problem or Hypothesis**/ समस्या या परिकल्पना का विवरण: "**कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ** " इस परियोजना कार्य का विषय है। इसके अंतर्गत कृष्ण भक्ति शाखा की विशेषताओं का अध्ययन किया जाएगा। इसके आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि भारतीय साहित्य में विशेषतः मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्ति शाखा की विशेषता क्या है। यह भी देखने का प्रयास किया जाएगा कि कृष्ण भक्ति शाखा की भक्ति पद्धति से सामाजिक एकता को किस प्रकार सुदृढ़ करने का प्रयास किया है।

**3.Aims and Objectives लक्ष्य&उद्देश्य :** इस परियोजना कार्य के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं:

1. सगुण भक्ति पद्धति कि विशेषता को उजागर करना है।
2. हिन्दी भक्ति साहित्य में कृष्ण भक्ति शाखा के महत्व को जानना है।
3. कृष्ण भक्ति भावना की विशेषताओं को उजागर करना है।
4. कृष्ण भक्त कवियों के जीवन परिचय से अवगत होना है।

**4. Review of Literature साहित्य की समीक्षा :**

हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्ति शाखा के साहित्य पर बहुत सारे शोध और परियोजना कार्य सम्पन्न हुए हैं । विशेषतः कृष्ण भक्ति-भावना पर तथा प्रेम व समन्वय भावना पर कई अध्ययन हुए हैं। इन अध्ययनों में भक्ति का स्वरूप तथा सामाजिक विकास के बारे में कृष्ण भक्त कवियों के विचारों को उल्लेख किया गया है।इस परियोजना कार्य में विशेष रूप से कृष्ण भक्ति-भावना की विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

**5. Research Methodology शोध क्रियाविधि :-**

शोध के कई पर्यायवाची शब्द हें। जैसे -अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषण, खोज आदि। साधरणतः साहित्य में शोध और अनुसंधान शब्द ही प्रचलित हैं। किसी विषय का उसके विभिन्न पक्षोंकों तथ्यों , तत्वों, आधारों, तर्क शीलता आदि कसौटियों पर परखना ही शोध

कहलाता है। शोध के कई प्रकार हैं। जैसे – सर्वेक्षण पद्धति , आलोचनात्मक पद्धति ,समाजशास्त्रीय पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, समस्यात्मक पद्धति आदि। हमने इस परियोजना कार्य के लिए समाजशास्त्रीय शोध विधि को अपनाते हुये कृष्ण भक्ति शाखा के साहित्य में भक्ति भावना की विशेषताओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

**6. Analysis of Data.डेटा का विश्लेषण : -**

कृष्ण भक्ति साहित्य में उल्लेखित भक्ति संबंधी साहित्य का अध्ययन करेने केलिए हमने विशेष रूपसे द्वितीय वर्ष स्नातक के पाठ्यक्रम में निर्धारित हिन्दी साहित्य का इतिहास को आधार बनाया है। इसमें कृष्णाश्रयी शाखा में उल्लेखित प्रत्येक अंश से संबन्धित विषयों को तथा सूरदास आदि कृष्ण भक्त कवियों से संबन्धित अनेक ग्रन्थों में खोजा है। इसकेलिए हमने **जडचेरला** में स्थित शाखा-ग्रंथालय, **महबूब नगर** में स्थित जिला ग्रंथालय आदि में जाकर परियोजना सामाग्री को संग्रहीत किया है। इस सामग्री को व्यवस्थित ढंग से निर्धारित परियोजना कार्य के अनुसार उपयोग किया गया है।

**7.Findigs जाँच – परिणाम : –**

इस परियोजना-कार्य का यह परिणाम निकाला है कि कृष्ण भक्ति भावना भारतीय समाज को एकता व प्रेम में पिरोने में सफल रही है। विशेष रूप से समाज में समन्वय स्थापित करने के लिए सूरदास द्वारा रचित सूरसागर और मीरा की पदावली विशेष सहयोग दिये हैं । कुल मिलकर कृष्ण भक्ति शाखा भारतीय साहित्य तथा समाज को सुदृढ़ किया है।

**8. Conclusion and Suggestion निष्कर्ष और सुझाव :** कृष्ण भक्ति शाखा अपने साहित्य से भारतीय समाज को एकता व प्रेम के माधुर्य में बांधने में सफल रही है। समाज के विभिन्न वर्गों को एकत्रित करने में यह शाखा सफल रही है। भगवान की भक्ति करने का सरल उपाय समाज के लोगों को देने का प्रयास किया है। इस प्रकार कृष्ण भक्ति भावना समाज के सभी लोगों को परमात्मा के प्रति आस्था जगाने में मदद की है।

**********

# "Krishna Bhakti Kavya Ki Visheshatayein "
# कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएं

## 1.परिचय :

भारतीय धर्म साधना संस्कृति साहित्य तथा कलाएं कृष्ण के विलक्षण व्यक्तित्व से जिस रूप में प्रभावित हैं उतने वे किसी अन्य चरित्र से नहीं। कृष्ण आख्यान की परंपरा अत्यंत प्राचीन है जो कि भारतीय साहित्य में विविध रूपों में उपलब्ध होती है। वैदिक तथा संस्कृत साहित्य में कृष्ण के तीन रूप मिलते हैं ऋषि एवं धर्म उपदेशक, नीति विशारद क्षत्रिय राजा, बाल और किशोर रूप में विभिन्न प्रकार की अलौकिक तथा अलौकिक लीलाकारी अवतार पुरुष के रूप में।

## 2. कृष्ण भक्ति काव्य का परिचय

प्रथम रूप का विकास भागवत गीता में दूसरे का महाभारत में तथा तीसरे का पुराण ग्रंथों में मिलता है। भारतीय साहित्य और संगीत धर्म और अध्यात्म संस्कृति और सभ्यता कृष्ण के चरित्र से अद्वितीय रूप में प्रभावित हुई है। महाभारत में अनेक ऐसे स्थल देखे जा सकते हैं जहां कृष्ण के पूजे जाने का उल्लेख है। वेदव्यास अर्जुन और युधिष्ठिर उन्हें पूज्य एवं धर्म-धुरंदर मानते हैं। महाभारत के पश्चात शताब्दियों तक कृष्ण पूजा का प्रचलन रहा। संस्कृत काव्य में तो कृष्ण भक्ति का स्वरूप बहुत प्राचीन काल से विकसित हो गया था। इस दृष्टि से जयदेव द्वारा रचित गीतगोविंद राधा माधव के चरित्र पर आधारित अप्रतिम धार्मिक काव्य ग्रंथ है।
गीतगोविंद का अनुकरण करते हुए संस्कृत साहित्य में अनेक कृष्ण काव्य ग्रंथ लिखे गए। हिंदी में कृष्ण काव्य का आरंभ करने वाले विद्यापति भी गीत गोविंद से ही प्रभावित दिखाई देते हैं। ईसा की 15वीं शताब्दी में कृष्ण भक्त कवियों ने कृष्ण के रूप और चरित्र का वर्णन किया उससे कृष्ण भक्ति काव्य इतना गहरा और लोकव्यापी हो गया, शायद इससे पहले ऐसा नहीं था। हिंदी के मध्यकालीन कृष्ण भक्त कवियों के साहित्य में सरसता, माधुर्यता, तल्लीनता और काव्य सुधा अनुपम है।

भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा में कृष्ण काव्य का विशेष महत्व है। कृष्ण भक्ति काव्य धारा से अभिप्राय उस काव्यधारा से है जिसमें कवियों ने भगवान विष्णु के अवतार कृष्ण के चरित्र को आधार बनाकर अपने काव्य ग्रंथों की रचना की। इस परंपरा के कवियों ने कृष्ण के बाल रूप के एवं उनकी विविध लीलाओं के हृदयग्राही चित्र अपने काव्य में अंकित किए हैं। भागवत पुराण इस काव्यधारा का आधार ग्रंथ है। कृष्ण भक्ति के प्रचार में वल्लभाचार्य के 'पुष्टि संप्रदाय' का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है।

पुष्टिमार्ग में ईश्वर के अनुग्रह की याचना की जाती है, इसी अनुग्रह का नाम पुष्टि है। इस पुष्टि के अनुसार प्रेम और अनुराग के फल स्वरुप ही कृष्ण का अनुग्रह प्राप्त करने के बाद भक्ति की अनुभूति होती है। वल्लभाचार्य ने कृष्ण भक्तों को श्रीकृष्ण की लालाओँ का गुणगान करने की प्रेरणा दी। उनके प्रमुख शिष्य सूरदास थे जो इस शाखा के प्रतिनिधि कवि भी हैं। वल्लभाचार्य के बेटे श्री विट्ठलनाथ ने पुष्टिमार्गी कवियों अर्थात अपने पिता के 84 शिष्यों में से चार शिष्यों सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास और कृष्णदास को तथा अपने 252 शिष्यों में से चार शिष्यों नंददास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी और गोविंदस्वामी को लेकर आठ शिष्यों के एक समूह की स्थापना की जिसे अष्टछाप के नाम से संबोधित किया गया।

इन आठ कवियों में सूरदास तथा नंददास अग्रणी हैं। इसके अतिरिक्त कृष्ण भक्ति काव्य धारा के कवियों में मीराबाई और रसखान का नाम भी प्रमुख रूप से लिया जाता है। कृष्ण भक्ति काव्य में रस,आनंद, और प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम श्रीकृष्ण या राधाकृष्ण की लीला बनी है । इस काव्य की विशेषताएँ इस प्रकार से हैं :-

## ३. कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ :

### 1. कृष्ण लीलाओं का वर्णनः

कृष्ण भक्त कवि लोकरंजनकारी कृष्ण की लीलाओं का उन्मुक्त गायन किया है।सूरदास की एक ही आशा और अभिलाषा है-कृष्ण-लीलागान। कृष्ण भक्ति के अनुसार कृष्ण ही केवल मात्र पुरुष है, शेष सभी जीवात्माएं हैं जो कि सदा कृष्ण लीला और बिहार में लिप्त रहती हैं। कृष्ण भक्त कवियों ने श्रीकृष्ण की बालरुप में वात्सल्य रस से पूर्ण लीलाएँ, सख्य रूप में लीलाएँ, गोपियों के साथ माधुर्य भावपूर्ण लीलाएँ समस्त कृष्ण भक्ति काव्य में व्याप्त है। सूर ने शुद्ध भक्ति भाव से कृष्ण की बाल लीलाओं के साथ-साथ राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का अत्यंत मनोहारी वर्णन किया है। सूर के लीला वर्णन का एक उदाहरण देखिए-

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज की पंछी, फिरि जहाज पै आवै॥
कमल-नैन को छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै।
परम गंग को छाँड़ि पियासो, दुरमति कूप खनावै॥
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यो, क्यों करील-फल भावै।
'सूरदास' प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै॥

### 2. बालमनोविज्ञान का अद्‌भूत चित्रणः

कृष्ण भक्त कवियों ने श्रीकृष्ण के बाल-जीवन को जितने विशद्, सूक्ष्म और स्वाभाविक ढंग से वर्णित किया है, वैसा मनोवैज्ञानिक चित्रण अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता है। बाल मनोविज्ञान की जितनी गहरी पकड़ सूरदास के काव्य नहीं है, उतनी किसी अन्य हिंदी के कवि के काव्य में दिखाई नहीं पड़ती। उन्होंने कृष्ण के बाल्य जीवन की विविध मानसिक अवस्थाओं को बड़े ही सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। बच्चे के मन में ईर्ष्या, स्पर्धा, विस्थापन जिज्ञासा, भय, रूठना, मनाना, मानना, लज्जा आदि जो भाव रहते हैं उनका अत्यंत प्रभावशाली चित्रण उनके काव्य में मिलता है। बालकृष्ण को गोद में लेकर नंद बाबा ने घड़े में झांका तो कृष्ण को लगा कि नंद बाबा ने किसी और को गोद में उठा लिया है और अपना बेटा बना लिया है। बालकृष्ण ईर्ष्या वश मां के पास चले जाते हैं और कह देते हैं कि अब मैं नंद का बेटा नहीं हूं। इस प्रसंग को सूरदास ने अत्यंत सुंदर ढंग से वर्णित किया है-

कहियो जाई जसुमति सो तांछन, मैं जनति सुत तेरो
आजु नंद सुत और कियो, कुछ कियौ न आदर मेरौ।

इसी प्रकार बालकृष्ण चाहते हैं कि उनकी छोटी एक बड़े भाई की चोटी की तरह लंबी और मोटी हो जाए इसी स्पर्धा भाव के कारण हो मां यशोदा से कहते हैं-

मैया कबहुं बढ़ैगी चोटी।
किती बेर मोहि दूध पियत भइ यह अजहूं है छोटी॥
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत न्हवावत जैहै नागिन-सी भुई लोटी॥
काचो दूध पियावति पचि पचि देति न माखन रोटी।
सूरदास त्रिभुवन मनमोहन हरि हलधर की जोटी॥

## 3.अद्वितीय वात्सल्य चित्रणः

कृष्ण के बाल वर्णन में वात्सल्य वर्णन का अनूठा स्थान है। विशेष रुप से सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य अद्वितीय काव्य है। सूर वात्सल्य है और वात्सल्य सूर है। हिंदी साहित्य में सूरदास का वात्सल्य रस का सम्राट कहा जाता है।आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ठीक ही लिखा है कि सूरदास बंद आंखों से वात्सल्य रस का कोना कोना झांक आए हैं। यशोदा के हृदय की सहजता और सरलता का कवि अत्यंत मर्मस्पर्शी वर्णन करते हैं। माँ यशोदा अपने शिशु को पालने में सुला रही हैं और निंदिया से विनती करती है की वह जल्दी से उनके लाल की अंखियों में आ जाए |

जसोदा हरी पालनै झुलावै |
हलरावै दुलराय मल्हरावै जोई सोई कछु गावै |
मेरे लाल कौ आउ निंदरिया, काहै मात्र आनि सुलावै |
तू काहे न बेगहि आवे, तो का कान्ह बुलावें |

कृष्ण का शैशव रूप घटने लगता है तो माँ की अभिलाषाएं भी बढ़ने लगती हैं उसे लगता है कि कब उसका शिशु उसका उसका आँचल पकड़कर डोलेगा, कब उसे माँ और अपने पिता को पिता कहके पुकारेगा। सूरदास लिखते है –

जसुमति मन अभिलाष करै,
कब मेरो लाल घुतरुवनी रेंगै, कब घरनी पग द्वैक भरे,
कब वन्दहिं बाबा बोलौ, कब जननी काही मोहि ररै ,
रब घौं तनक-तनक कछु खैहे, अपने कर सों मुखहिं भरे
कब हसि बात कहेगौ मौ सौं, जा छवि तै दुख दूरि हरै|

## 4. सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन की अभिव्यक्तिः

कृष्ण भक्त कवि यद्यपि कृष्ण की लीला वर्णन में तल्लीन रहे परंतु उनके काव्य में तत्कालीन समाज व संस्कृति का भी संयोगवश चित्रण हुआ है। तत्कालीन युग में प्रचलित धर्म साधना अनेक संप्रदाय के साधकों की वेशभूषा, खानपान आदि का वर्णन इन कवियों ने किया है। सूरदास ने अपने भ्रमरगीत में अलख वादियों, निर्गुण संतो तथा अद्वैतवादियों की अच्छी खबर ली है, साथ ही साथ उन्होंने समाज में व्याप्त रूढ़ियों व कुरीतियों पर भी प्रहार किया है। गोपियों के निम्न संवाद के माध्यम से सूरदास ने योग साधकों की वेशभूषा का वर्णन किया है-

सुंगी, मुद्रा, भस्म, त्वचा मृग, अरू अवधारन पौन
हम अबला अहीरी सठ मधुकर, धीर जनहिं कहीं कौन।

## 5. भक्ति भावनाः

सूरदास श्री कृष्ण के अनन्य भक्त हैं। उन्होंने पुष्टिमार्ग के सिद्धांतों के आधार पर कृष्ण को अपना आराध्य स्वीकार कर उनकी लीलाओं का गान किया है। उनकी भक्ति सगुण भक्ति है। उनकी रचनाओं में प्रेम भक्ति के साथ-साथ दास्य, सख्य, माधूर्य तथा वात्सल्य भावों की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। उनकी दास्य भक्ति का एक उदाहरण देखिए-

प्रभु, हौं सब पतितन कौ राजा।
परनिंदा मुख पूरि रह्यौ जग, यह निसान नित बाजा॥

सूरदास की भक्ति विशेष रूप से सख्य भाव लिए हुए हैं। माधूर्य या प्रेम भाव की भक्ति के कारण धीरे–धीरे कृष्ण भक्ति धारा में श्रृंगारिकता का विकास होता चला गया। सूरदास अपने आराध्य को संसार के समस्त कष्टों को तारणहार के रूप में चित्रित करते हुए हते हैं–

चरन कमल बंदौ हरिराई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे,अंधे को सब कछु दरसाई ॥१॥ बहरो सुने मूक पुनि बोले,रंक चले सिर छत्र धराई । 'सूरदास' स्वामी करुणामय, बारबार बंदौ तिहिं पाई ॥२□

## 6. श्रृंगार वर्णनः

कृष्ण भक्त कवि भक्ति रस के कवि थे। उनके काव्य में श्रृंगार रस का अद्‌भुत चित्रण हुआ है। सर्वप्रथम तो स्वयं भगवान कृष्ण का चरित्र श्रृंगार प्रधान है। अतः उनकी लीलाओं के वर्णन में श्रृंगार के लिए पर्याप्त स्थान था। इन कवियों ने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सुंदर वर्णन किया है। ब्रज की गोपियां श्री कृष्ण के रूप माधुर्य पर आसक्त हो जाती है। श्री कृष्ण की बांसुरी तो मानो गोपियों के लिए जादू का काम करती है। कृष्ण और राधा की प्रथम मिलन का बड़ा सुंदर वर्णन सूरदास द्वारा किया गया है–
बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहां रहति काकी है बेटी देखी नहीं कहूं ब्रज खोरी॥
काहे कों हम ब्रजतन आवतिं खेलति रहहिं आपनी पौरी।
सुनत रहति स्त्रवननि नंद ढोटा करत फिरत माखन दधि चोरी॥
तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि बातनि भुरइ राधिका भोरी॥

## 7. भ्रमरगीत काव्य परंपराः

कृष्ण काव्यधारा के सभी कवियों ने भ्रमरगीत परंपरा को अपनाया। भ्रमरगीत काव्य का आधार कृष्ण के मित्र उद्धव और गोपियों का संवाद है। भ्रमरगीत का मूलस्रोत, श्रीमद्भाग्वत पुराण का दशम स्कंध है। श्रीकृष्ण गोपियों को छोङकर मथुरा चले गए और गोपियां विरह विकल हो गई। कृष्ण मथुरा में लोकहितकारी कार्यों में व्यस्त थे किन्तु उन्हें ब्रज की गोपियों की याद सताती रहती थी। उन्होंने अपने अभिन्न मित्र उद्धव को संदेशवाहक बनाकर गोकुल भेजा। गोपियों ने उद्धव को भ्रमर को प्रतीक बनाकर अन्योक्ति के माध्यम से उद्धव और कृष्ण पर जो व्यंग्य किए एवं उपालम्भ दिए उसी को 'भ्रमरगीत' के नाम से जाना गया। भ्रमरगीत प्रसंग में निर्गुण का खण्डन, सगुण का मण्डन तथा ज्ञान एवं योग की तुलना में प्रेम

और भक्ति को श्रेष्ठ ठहराया गया है। भ्रमर गीत का मूल उद्देश्य निर्गुण पर सगुण की विजय दर्शाना है–

निरगुन कौन देश कौ बासी।
मधुकर, कहि समुझाइ, सौंह दै बूझति सांच न हांसी॥
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि को दासी।
कैसो बरन, भेष है कैसो, केहि रस में अभिलाषी॥

## 8. प्रकृति चित्रणः

कृष्ण भक्त कवियों के काव्य में प्रकृति का व्यापक चित्रण हुआ है। इन कवियों ने कृष्ण की लीलाओं की पृष्ठभूमि के रूप में प्रकृति का चित्रण किया है। वृंदावन के वन, नदी, पर्वत, झरने, कुंज–लियां सभी कुध कृष्ण के रंग में रंगे नजर आते हैं। जब तक कृष्ण गोकुल में रहे प्रकृति भी उन्हीं के रास–रंग में रंगती रही। जैसे ही कृष्ण ने मथुरा के लिए प्रस्थान किया प्रकृति का रुप भी मुरझाने लगा। सूरदास ने गोपियों के सुख–दुख की अनुभूतियों को व्यक्त करते समय प्रकृति का हृदयकर्षी वर्णन किया है–

बिनु गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं अलि गुंजैं।
पवन, पानी, धनसार, संजीवनि दधिसुत किरनभानु भई भुंजैं।
ये ऊधो कहियो माधव सों, बिरह करद करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत, अंखियां भई बरन ज्यौं गुजैं।

## 9. ब्रजभाषा का अप्रतिम काव्यः

कृष्ण काव्यधारा के कवियों ने ब्रजभाषा को ही अपनी काव्यभाषा बनाया है। सूरदास ब्रजभाषा के पहले कवि माने जाते हैं जिन्होंने ब्रजभाषा को साहित्यिक रूप प्रदान किया। कृष्ण की ब्रजभूमि की मधुर भाषा को अपने काव्य का ादार बनाकर इन कवियों ने ब्रजबाषा को काव्यबाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। इनकी भाषा में संगीतात्मकता का गुण विद्यामान है। यह काव्य मुक्तक और गेय काव्य है। अलंकारों की दृष्टि से इसमें रुपक, उपमा, दृष्टांत और उत्प्रेक्षा का अधिक प्रयोग हुआ है तथा छंदों में चौपाई, चौबोला, कवित्त, सवैया, गीतिका, छप्पय तथा हरिगीतिका आदि का प्रयोग हुआ है।

अंखियां हरि–दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूप–रस रांची ये बतियां सुनि रूखी॥
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब ये तौ नहिं झूखी।
अब इन जोग संदेसनि ऊधो, अति अकुलानी दूखी॥
बारक वह मुख फेरि दिखावहुदुहि पय पिवत पतूखी।
सूर, जोग जनि नाव चलावहु ये सरिता हैं सूखी॥

## निष्कर्ष :

कृष्ण काव्य धारा के प्रमुख कवियों में सूरदास, मीरा, नंददास, रसखान जैसे महान कवि थे उन्होंने अपने काव्य में राधा–कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए जीवन के प्रति आवश्यक राग रंगो को उजागर किया है। इनके काव्य में प्रकृति के चित्रण है कृष्ण काव्य धारा के कवियों की भाषा ब्रजभाषा है वे अपने काव्य में अलंकार तथा छंद एवं रस का प्रयोग करते हुए कृष्ण भक्ति को बखूबी दर्शाया है। इस प्रकार कृष्ण काव्य की विशेषताओं में ये सभी तत्व विराजमान है। अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास मे कृष्ण की लीलाओ के गान, कृष्ण के प्रति सख्य भावना आदि की दृष्टि से कृष्ण काव्य का महत्वपूर्ण स्थान है। कृष्ण भक्ति साहित्य ने सैकड़ो वर्षो तक भक्तजनों का हृदय मुग्ध किया। यह काव्य हिंदी साहित्य की अद्वितीय निधि है।

# संदर्भ सूची

**1 काव्य निधि – डिग्री द्वितीय वर्ष**
**2 .हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल**
**3 इन्टरनेट पर आधारित सामाग्री**

मीराबाई

**सूरदास**